चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	09.09.26	-----	----

हकृवि वैज्ञानिकों और कृषि अधिकारियों की कार्यशाला फसलों में नई सिफारिशों के लिए दो दिन करेंगे मंथन

आधुनिक तकनीकों को प्रभावी ढंग से किसानों तक पहुंचाना जरूरी : प्रो. बलदेव राज काम्बोज

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के सभागार में कृषि अधिकारी कार्यशाला (रबी) 2026 का शुभारंभ हुआ। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला का बतौर मुख्य अतिथि उद्घाटन किया। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक तथा प्रदेश के कृषि और किसान कल्याण विभाग के सभी जिलों से कृषि अधिकारी भाग ले रहे हैं।

कुलपति प्रो. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि कृषि विभाग और विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के बीच बेहतर समन्वय से कृषि संबंधी नवीन तकनीकों को किसानों तक प्रभावी ढंग से पहुंचाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि बदलती जलवायु, प्राकृतिक संसाधनों की सीमित उपलब्धता तथा बढ़ती कृषि लागत को ध्यान में रखते हुए किसानों को ऐसी तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए, जिससे उत्पादन के साथ-साथ उनकी आय में भी वृद्धि हो सके। प्राकृतिक एवं ऑर्गेनिक खेती को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा योजनाबद्ध ढंग से कार्य किया जा रहा है। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्र प्रदेशभर के लगभग 40 हजार किसानों को प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण भी प्रदान करेंगे। उन्होंने कहा कि किसानों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक

निरंतर अनुसंधान एवं नई तकनीक पर काम कर रहे हैं व कृषि विभाग के अधिकारियों के साथ मिलकर इन तकनीकों को किसानों तक पहुंचाया जा रहा है।

कुलपति ने बताया कि वर्तमान में फसल अवशेष प्रबंधन, फसल विविधिकरण, मृदा स्वास्थ्य व जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों को ध्यान में रखते हुए आधुनिक तकनीक का उपयोग करके फसल उत्पादन बढ़ाने व कृषि से जुड़ी समस्याओं का तत्परता से समाधान करने की आवश्यकता है। दो दिवसीय कार्यशाला के दौरान रबी फसलों की बुवाई से पूर्व किसानों को आवश्यक कृषि आदानों की उपलब्धता, गुणवत्तापूर्ण बीज, फसलवार अनुशंसित किस्में, उर्वरक एवं सिंचाई प्रबंधन, कीट एवं रोग नियंत्रण तथा मौसम आधारित कृषि सलाह उपलब्ध करवाने को लेकर भी विचार-विमर्श किया जाएगा। साथ ही किसानों को फसल विविधीकरण, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा आधुनिक एवं टिकाऊ कृषि तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित करने की योजना तैयार की जाएगी। उन्होंने कहा कि इस कार्यशाला में वैज्ञानिकों एवं कृषि अधिकारियों के सामूहिक मंथन से रबी-2026 की सस्य सिफारिशों में सुधार लाने में मदद मिलेगी।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ राजप्रताप सिहाग ने सरकार द्वारा किसानों के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। इन योजनाओं में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, भावान्तर भरपाई योजना, मेरा पानी-मेरी विरासत, हर खेत स्वस्थ खेत, तथा मेरी फसल मेरा ब्यौरा योजना शामिल हैं। उन्होंने किसानों को दी जा रही अनुदान योजनाओं के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने विश्वविद्यालय से बेहतर फसल चक्र एवं उनके मुनाफे पर अध्ययन करने, पारंपरिक खेती की प्राकृतिक व ऑर्गेनिक खेती से मुनाफे के हिसाब से तुलना करने, पैदावार का अनुमान, आगे भी सभी फसलों की एडवाइजरी जारी करने, विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए आकस्मिक योजना तैयार करने संबंधी जानकारी उपलब्ध करवाने के बारे में सुझाव दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
राष्ट्रीय सभ्यता न्यूज	09.09.26	-----	----

आधुनिक तकनीकों को प्रभावी ढंग से किसानों तक पहुंचाना जरूरीः प्रो. काम्बोज

राष्ट्रीय सभ्यता रिपोर्टर

हिसार (एस के गौड़)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के सभागार में कृषि अधिकारी कार्यशाला (रबी) 2026 का शुभारंभ हुआ। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला का बतौर मुख्य अतिथि उद्घाटन किया। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक तथा प्रदेश के कृषि और किसान कल्याण विभाग के सभी जिलों से कृषि अधिकारी भाग ले रहे हैं। कुलपति प्रो. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि कृषि विभाग और विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के बीच बेहतर समन्वय से कृषि संबंधी नवीन तकनीकों को किसानों तक प्रभावी ढंग से पहुंचाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि बदलती जलवायु, प्राकृतिक संसाधनों की सीमित उपलब्धता तथा बढ़ती कृषि लागत को ध्यान में रखते हुए किसानों को ऐसी तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए, जिससे उत्पादन के साथ-साथ उनकी आय में भी वृद्धि हो सके। प्राकृतिक एवं ऑर्गेनिक खेती को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा योजनाबद्ध ढंग से कार्य किया जा रहा है। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्र प्रदेशभर के लगभग 40 हजार किसानों को प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण भी प्रदान करेंगे। उन्होंने कहा कि किसानों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक निरंतर अनुसंधान एवं नई तकनीक पर काम कर रहे हैं व कृषि विभाग के अधिकारियों के साथ मिलकर इन तकनीकों को किसानों तक पहुंचाया जा रहा है।

कुलपति ने बताया कि वर्तमान में फसल अवशेष प्रबंधन, फसल विविधिकरण, मृदा स्वास्थ्य व जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों को ध्यान में रखते हुए आधुनिक तकनीक का उपयोग करके फसल उत्पादन बढ़ाने व कृषि से जुड़ी समस्याओं का तत्परता से समाधान करने की आवश्यकता है। दो दिवसीय कार्यशाला के दौरान रबी फसलों की बुवाई से पूर्व किसानों को आवश्यक कृषि आदानों की उपलब्धता, गुणवत्तापूर्ण बीज, फसलवार अनुशंसित किस्मों, उर्वरक एवं सिंचाई प्रबंधन, कीट एवं रोग नियंत्रण तथा मौसम आधारित कृषि सलाह उपलब्ध करवाने को लेकर भी विचार-विमर्श किया जाएगा। साथ ही किसानों को फसल विविधिकरण, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा आधुनिक एवं टिकाऊ कृषि तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित करने की योजना तैयार की जाएगी। उन्होंने कहा कि इस कार्यशाला में वैज्ञानिकों एवं कृषि अधिकारियों के सामूहिक मंथन से रबी-2026 की समग्र सिफारिशों में सुधार लाने में मदद मिलेगी।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ रामप्रताप सिहाग ने सरकार द्वारा किसानों के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। इन योजनाओं में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, भावान्तर भरपाई योजना, मेरा पानी-मेरी विरासत, हर खेत स्वस्थ खेत, तथा मेरी फसल मेरा ब्यौरा योजना शामिल हैं। उन्होंने किसानों को दी जा रही अनुदान योजनाओं के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने विश्वविद्यालय से क्षेत्रवार फसल चक्र एवं उनके मुनाफे पर अध्ययन करने, पारंपरिक खेती की प्राकृतिक या ऑर्गेनिक खेती से मुनाफे के हिसाब से तुलना करने, पैदावार का अनुमान, आगे भी सभी फसलों की एडवाइजरी जारी करने, विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए आकस्मिक योजना तैयार करने संबंधी जानकारी उपलब्ध करवाने के बारे में सुझाव दिया। अनुसंधान निदेशक डॉ राजबीर गर्ग ने कार्यशाला में गेहूं, सरसों, जौ तथा गन्ना सहित विभिन्न रबी फसलों के क्षेत्र में विश्वविद्यालय द्वारा अर्जित की गई उपलब्धियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ नरेश कौशिक ने सभी का स्वागत करते हुए दो दिवसीय कार्यशाला के दौरान की जाने वाली गतिविधियों के बारे में बताया। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ राजेश गेरा ने सभी का धन्यवाद किया। मंच संचालन डॉ. सुनील डाबा ने किया। इस अवसर पर विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, विभागाध्यक्ष कृषि तथा किसान कल्याण वि अधिकारी

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	10.9.26	5	2-5

आधुनिक तकनीकों को प्रभावी ढंग से किसानों तक पहुंचाना जरूरी : प्रो. बलदेव

दो दिवसीय कार्यशाला में फसलों में नई समग्र सिफारिशों के लिए करेंगे मंथन

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के सभागार में कृषि अधिकारी कार्यशाला (रबी) 2026 का शुभारंभ हुआ। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला का बतौर मुख्य अतिथि उद्घाटन किया। कार्यशाला में प्रदेश के कृषि और किसान कल्याण विभाग के सभी जिलों से कृषि अधिकारी भाग ले रहे हैं।

कुलपति प्रो. काम्बोज ने कहा कि कृषि विभाग और विश्वविद्यालय के विज्ञानियों के बीच बेहतर समन्वय से कृषि संबंधी नवीन तकनीकों को किसानों तक प्रभावी ढंग से पहुंचाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि बदलती जलवायु, प्राकृतिक संसाधनों की सीमित उपलब्धता तथा बढ़ती कृषि लागत को ध्यान में रखते हुए किसानों को ऐसी तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए, जिससे उत्पादन के साथ-साथ उनकी आय में भी वृद्धि हो सके। प्राकृतिक एवं आर्गेनिक खेती को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा योजनाबद्ध ढंग से कार्य किया जा रहा है। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्र प्रदेशभर के लगभग 40 हजार किसानों को प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण भी प्रदान करेंगे। उन्होंने कहा कि किसानों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय के विज्ञानी निरंतर अनुसंधान एवं नई तकनीक पर काम कर रहे हैं।

कुलपति ने बताया कि वर्तमान में फसल अवशेष प्रबंधन, फसल विविधिकरण, मृदा स्वास्थ्य व जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों को ध्यान में रखते हुए आधुनिक तकनीक का उपयोग करके फसल उत्पादन बढ़ाने व कृषि से जुड़ी समस्याओं का तत्परता से समाधान करने की आवश्यकता है। इस दौरान रबी फसलों की बुवाई से पूर्व किसानों को आवश्यक कृषि आदानों की उपलब्धता, गुणवत्तापूर्ण बीज, फसलवार अनुशंसित किस्मों, उर्वरक एवं सिंचाई प्रबंधन, कीट एवं रोग नियंत्रण तथा मौसम आधारित कृषि सलाह उपलब्ध करवाने को लेकर भी विचार-विमर्श किया जाएगा।

कार्यशाला को संबोधित करते कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज • पीआरओ

किसानों के लिए चलाई जा रही योजनाओं की दी जानकारी

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त निदेशक डा. रामप्रताप सिहाग ने सरकार द्वारा किसानों के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने विश्वविद्यालय से क्षेत्रवार फसल चक्र एवं उनके मुनाफे पर अध्ययन करने, पारंपरिक खेती की प्राकृतिक या आर्गेनिक खेती से मुनाफे के हिसाब से तुलना करने, पैदावार का अनुमान, आगे भी सभी फसलों की एडवाइजरी जारी करने, विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए आकस्मिक योजना तैयार करने संबंधी जानकारी उपलब्ध करवाने के बारे में सुझाव दिया। अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने कार्यशाला में गेहूं, सरसों, जौ तथा गन्ना सहित विभिन्न रबी फसलों के क्षेत्र में विश्वविद्यालय द्वारा अर्जित की गई उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर विस्तार शिक्षा निदेशक डा. नरेश कौशिक, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. राजेश गेरा व मंच संचालक डा. सुनील ढांडा मौजूद थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	10-9-26	3	3-4

एचएयू में कार्यशाला शुरू, विभिन्न जिलों से पहुंचे अधिकारी

कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज दो दिवसीय कार्यशाला को संबोधित करते हुए।

प्राकृतिक खेती के लिए केवीके में 40 हजार किसानों की ट्रेनिंग होगी

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि अधिकारी कार्यशाला रबी 2026 की शुरुआत हुई। दो दिवसीय कार्यक्रम का उद्घाटन कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किया। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक और कृषि व किसान कल्याण विभाग के विभिन्न जिलों से आए अधिकारी भाग ले रहे हैं।

कुलपति ने कहा कि विभाग और वैज्ञानिकों के समन्वय से नई कृषि तकनीकें किसानों तक अधिक असरदार ढंग से पहुंचाई जा सकती हैं। बदलती जलवायु, सीमित संसाधन और बढ़ती लागत के बीच ऐसी तकनीक अपनाने पर जोर दिया गया जो उत्पादन के साथ आय बढ़ाए। उन्होंने बताया कि प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए कृषि विज्ञान केंद्र लगभग 40 हजार किसानों को प्रशिक्षण देंगे। सत्रों में फसल अवशेष प्रबंधन, फसल विविधीकरण, मृदा स्वास्थ्य, गुणवत्तापूर्ण बीज, उर्वरक व सिंचाई प्रबंधन, कीट-रोग नियंत्रण और मौसम आधारित सलाह पर मंथन होगा। अतिरिक्त निदेशक डॉ. रामप्रताप सिहाग ने सरकारी योजनाओं की जानकारी दी, जबकि अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने रबी फसलों में विश्वविद्यालय की उपलब्धियां साझा कीं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भूमि	10-9-26	11	6-8

आधुनिक तकनीकों को प्रभावी ढंग से किसानों तक पहुंचाना जरूरी : प्रो. कंबोज

■ हकृवि वैज्ञानिकों एवं प्रदेश के कृषि अधिकारियों की कार्यशाला

हरिभूमि न्यूज ▸▸ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के सभागार में कृषि अधिकारी कार्यशाला (रबी) 2026 का शुभारंभ हुआ। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने दो दिवसीय कार्यशाला का मुख्य अतिथि के तौर पर उद्घाटन किया। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक तथा प्रदेश के कृषि और किसान कल्याण विभाग के सभी जिलों से कृषि अधिकारी भाग ले रहे हैं। कुलपति ने कहा कि कृषि विभाग और वैज्ञानिकों के समन्वय से आधुनिक तकनीकों को किसानों तक प्रभावी ढंग से पहुंचाया जा सकता है। जलवायु परिवर्तन, संसाधनों की कमी और बढ़ती लागत को देखते हुए ऐसी तकनीकों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है, जिससे किसानों की आय में वृद्धि हो। कुलपति ने बताया कि प्रदेश के कृषि विज्ञान केंद्र लगभग 40 हजार किसानों को प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण देंगे। रबी फसलों की बुवाई से पूर्व गुणवत्तापूर्ण बीज, उर्वरक व सिंचाई प्रबंधन, कीट-रोग नियंत्रण और मौसम आधारित सलाह पर मंथन किया जाएगा।

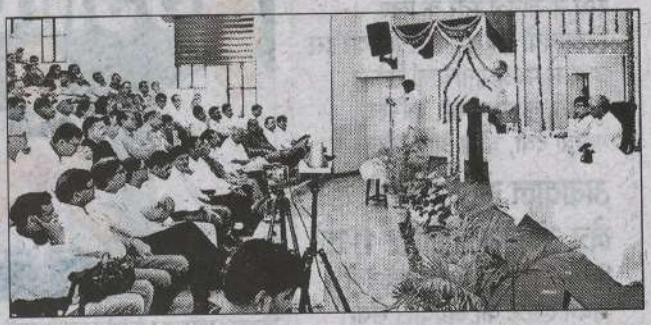

हिसार। कार्यशाला को संबोधित करते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज।

सरकारी योजनाओं और शोध पर सुझाव

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. रामप्रताप सिहाग ने 'प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि', 'मेरी फसल-मेरा ब्यौरा', 'मेरा पानी-मेरी विरासत' और 'भवंतर भरपाई योजना' की जानकारी दी। उन्होंने विश्वविद्यालय को क्षेत्रवार फसल चक्र के मुनाफे पर अध्ययन करने और पारंपरिक बनाम प्राकृतिक खेती की तुलनात्मक रिपोर्ट तैयार करने का सुझाव दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	10.9.26		

दैनिक भास्कर

बंदगोभी के लिए प्रति एकड़ 250 ग्राम बीज डालें किसान

बंदगोभी की अगेती बिजाई का अभी सही समय, 5 सप्ताह में तैयार हो जाएगी पौध

यशपाल सिंह | हिसार

बंदगोभी व गांठगोभी की अगेती किस्मों की बिजाई के लिए यह उपयुक्त समय है। बंदगोभी की किस्में प्राइड आफ इंडिया या गोल्डन लगाएं। गांठगोभी की किस्म, अर्ली व्हाइट वियाना प्रयोग करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि बंदगोभी की 1 एकड़ के लिए 200-250 ग्राम बीज की आवश्यकता होगी। गांठगोभी की किस्म, अर्ली व्हाइट वियाना प्रयोग करें। इसके लिए 800 ग्राम बीज प्रति एकड़ के लिए पौध तैयार होने में 5-6 सप्ताह का समय लगेगा। बीज बोने से पहले कैप्टान नामक दवा से उपचारित 2.5 ग्राम दवा प्रति किलोग्राम बीज की दर से करें। फूलगोभी की अगेती किस्म पूसा कातकी के खेत की उचित देखभाल करें। सिंचाई करें और रोपाई के लगभग 3 सप्ताह बाद प्रति एकड़ 35 किग्रा यूरिया यानी 16 किग्रा नाइट्रोजन व फूल बनने की अवस्था में भी 35 किग्रा यूरिया यानी 16 किग्रा नाइट्रोजन से टॉप ड्रैसिंग करें। नाइट्रोजन देने के बाद सिंचाई करें।

हिसार-1 की 15 सितंबर तक बिजाई करें

फूलगोभी की मध्य मौसमी किस्मों हिसार-1 की रोपाई कर सकते हैं। इसकी रोपाई अच्छी तरह तैयार खेत में 15 सितंबर तक करें।

पौधे से पौधे की दूरी व लाइन से लाइन की दूरी मध्यम वर्ग में 60 सेंटीमीटर रखें। पछेती किस्म स्नोबाल-16 की बिजाई भी नर्सरी में इस माह के अंत में शुरू की जा सकती है। इस समय अगेती गोभी को सुंडी आदि के प्रकोप से बचाने के लिए 400 मिली. मैलाथियान 50 ईसी को 250 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ फसल पर हर 10 दिन बाद छिड़काव करें।

टमाटर का सफेद मक्खी के प्रकोप से बचाव करें

सब्जी विभाग के अध्यक्ष डॉ. सुरेश तेलहन के अनुसार टमाटर की अगस्त में रोपी गई पौध की देखभाल करें और नाइट्रोजन खाद की पहली मात्रा रोपाई के लगभग 4-5 सप्ताह बाद डालें। एक एकड़ खेत

में लगभग 14 किलोग्राम नाइट्रोजन 30 किलोग्राम यूरिया देकर सिंचाई करें। नाइट्रोजन खाद की दूसरी मात्रा फसल में फूल आने की अवस्था में देनी होती है। यदि अधिक वर्षा हो तो जल निकास का प्रबंध करें और सूखा होने पर सिंचाई करें। सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर 400 मिलीलीटर मैलाथियान 50 ईसी. को 200-250 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ छिड़काव करें। विषाणु रोग को फैलाने वाली सफेद मक्खी की भी मैलाथियान से रोकथाम हो जाती है।

आधुनिक तकनीकों को प्रभावी ढंग से किसानों तक पहुंचाना जरूरी: प्रो.काम्बोज

फसलों में नई समग्र सिफारिशों के लिए दो दिन करेंगे मंथन

कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए।

हिसार, 9 सितम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के सभागार में कृषि अधिकारी कार्यशाला (रबी) का शुभारंभ हुआ। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला का बतौर मुख्य अतिथि उद्घाटन किया।

कुलपति प्रो. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि कृषि विभाग और विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के बीच बेहतर समन्वय से कृषि संबंधी नवीन तकनीकों को किसानों तक प्रभावी ढंग से पहुंचाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि बदलती जलवायु, प्राकृतिक संसाधनों की सीमित उपलब्धता तथा बढ़ती कृषि लागत को ध्यान में रखते हुए किसानों को ऐसी तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए, जिससे उत्पादन के साथ-साथ उनकी आय में भी वृद्धि हो सके। विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्र प्रदेशभर के लगभग 40 हजार किसानों को प्राकृतिक खेती, का प्रशिक्षण भी प्रदान करेंगे। साथ ही किसानों को फसल विविधीकरण, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा आधुनिक एवं टिकाऊ कृषि तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित करने की योजना तैयार की जाएगी। उन्होंने कहा कि इस कार्यशाला में वैज्ञानिकों एवं कृषि अधिकारियों के सामुहिक मंथन से रबी-2026 की समग्र सिफारिशों में सुधार लाने में मदद मिलेगी।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ रामप्रताप सिहाग ने सरकार द्वारा किसानों के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने कार्यशाला में गेहूं, सरसों, जौ तथा गन्ना सहित विभिन्न रबी फसलों के क्षेत्र में विश्वविद्यालय द्वारा अर्जित की गई उपलब्धियों पर विस्तार से प्रकाश डाला।